International Journal of Hindi Research
ISSN: 2455-2232; Impact Factor: RJIF 5.22
Received: 18-01-2019; Accepted: 20-02-2019
www.hindijournal.com
Volume 5; Issue 2; March 2019; Page No. 19-20

मुंशी प्रेमचंद की कहानियों में दलित चेतना

शिमला रानी
एम० ए०, हिंदी, कुरूक्षेत्र विश्वविद्यालय कुरूक्षेत्र, हरियाणा, भारत।

प्रस्तावना

प्रेमचंद हिन्दी साहित्य की अनमोल निधि हैं। उन्हें 'उपन्यास सम्राट', 'कलम का जादूगर' व 'कलम का मजदूर' आदि उपाधियों से विभूषित किया गया है। उन्होंने तीन सौ से भी अधिक कहानियों की रचना की है। उनकी कहानियों में तत्कालीन समाज की परिस्थितियों का अत्यंत ही मार्मिक व यथार्थ वर्णन मिलता है। उन्होंने समाज के हर प्रकार के शोषित वर्ग की समस्याओं को अपनी रचनाओं में स्थान दिया। उन्होंने किसानों, मजदूरों, दलितों व स्त्रियों के उत्पीड़न व कुंठा को अभिव्यक्ति प्रदान की। समाज की प्रमुख समस्याओं में से मानव की संकीर्ण मानसिकता व निर्दयता का परिचय देती है– जातिवाद की समस्या। प्रेमचंद जी ने अपनी कहानियों में अछूत व दलित समझे जाने वाले वर्ग की दयनीय स्थिति का सजीव चित्रण किया है। उनके द्वारा लिखित ठाकुर का कुआँ, मंदिर, मंत्र, सद्गति, कफन, घासवाली, सौभाग्य के कोड़े, व विध्वंस आदि कहानियाँ दलित समाज के शोषण, दुख व पीड़ा को प्रदर्शित करती हैं

जातिगत भेदभाव की उत्पत्ति

वेद व पुराण आदि धार्मिक ग्रंथों में जाति तथा वर्ण भेद की उत्पत्ति के साक्ष्य मिलते हैं। कहीं पर इसका आरम्भ ब्रह्म के विभिन्न अंगों से उत्पन्न होना बताया गया है तो कहीं पर मानव के व्यवसाय को इसका आधार माना गया है। प्राचीन समय में इस जाति भेद का कारण जो भी रहा हो किंतु वर्तमान समय में जाति का निर्धारण जन्म के आधार पर किया जाता है। अगर कोई मनुष्य स्वर्ण जाति में उत्पन्न होता है तो उसे पवित्र माना जाता है और इसके विपरित निम्न जाति में पैदा होने वाले मानव को अछूत व दलित समझा जाता है। यह हमारे देश की धार्मिक विडम्बंना है कि एक तरफ तो ये माना जाता है कि संपूर्ण सृष्टि की रचना ईश्वर ने की है। वहीं दूसरी तरफ उसी ईश्वर की रचना में धर्म के नाम पर भेदभाव किया जाता है। प्रेमचंद ने दलितों के प्रति समाज के इस निकृष्ट दृष्टिकोण को अपनी कहानियों के माध्यम से चित्रित किया है।

दलित पुरूष और स्त्रियों का शोषण व उत्पीड़न

परिवार के आर्थिक जीवनयापन का आधार पुरूष को माना जाता है। पुरूष धन कमाकर लाता है व स्त्री उस धन से भोजन बनाकर अपने परिवार का पालन–पोषण करती है। धीरे–धीरे इस सामाजिक व्यवस्था में बदलाव आ रहा है। स्त्री भी अब हर प्रकार के व्यवसाय में अपनी पहचान बना चुकी है। परंतु हमारे देश में व्यापक स्तर पर अभी भी यही व्यवस्था सर्वमान्य है। दलित व अछूत माने जाने वाले परूषों को आर्थिक रूप से निम्न वर्ग पर निर्भर रहना पड़ा है। उन्हें धर्म के दांव–पेंच में इस प्रकार फंसा दिया गया कि वे अपनी वर्तमान स्थिति से ऊपर उठने की कल्पना भी ना कर सकें। उन्हें केवल साफ–सफाई, मजदूरी व जमींदार के खेतों की देखभाल जैसे निम्न श्रेणी के कार्यों तक ही सीमित रखा गया। उन्हें इस हद तक प्रताड़ित किया गया कि वे अपनी अंतरात्मा से स्वंय को दीन–हीन व तुच्छ मान लें। उनके स्वाभिमान रूपी बीज को इतना गला दिया गया कि वह कभी प्रस्फुटित ही ना हो सके। 'सद्गति' कहानी का अछुत पात्र दुखी अपनी बेटी की सगाई के शुभ शगुन के लिए पंडित घासी राम को बुलाने के लिए जाता है। पंडित साथ चलने के बदले उससे झाड़ू लगाने, गोबर लेपने, भूसा लाने व लकड़ी काटने के लिए कहता है। वह बेचारा दिनभन भूखे पेट ये सारे काम निपटाने की कोशिश करता है। जब वह थककर चूर हो जाता है तो वह चिल्लम जलाने के लिए आग मांगने पंडित के द्वार पर चला जाता है। पंडिताइन एक अछूत के द्वारा घर अशुद्ध किये जाने पर पंडित को खरी–खोटी सुनाते हए कहती है, "तुम्हें तो जैसे पोथी–पत्रों के फेर में धरम–करम किसी बात की सुधि ही नहीं रही। चमार हो, धोबी हो, पासी हो मुँह उठाये घर में चला आये। हिन्दू का घर ना हुआ, कोई सराये हुई।"[1] वह बेचारा ये सब बातें सुनकर स्वंय ही अपने आप को दुत्कारनें लगता है, मानों उससे कोई महाअपराध हो गया हो। वह विनम्र होकर पंडिताइन से कहता है–"पंडिताइन माता, मुझसे बड़ी भूल हई कि घर में चला आया। चमार की अक्ल ही तो ठहरी। इतने मूरख ना होते, तों लात क्यों खाते।"[2] कहानी के अंत में वह बेचारा लकड़ी काटते–काटते मर जाता है और उसकी लाश को खेत में फेंक दिया जाता है। इससे साफ प्रदर्शित होता है कि पिछड़े व अछूत वर्ग को कितनी अमानवीयता व निर्दयता से प्रताड़ित किया गया। उनके अंदर स्वाभिमान के भाव के स्थान पर दीनता का भाव भर दिया गया।

दलितों को मंदिर में प्रवेश, ब्राह्मण आदि उच्च जाति के द्वार पर जाने, उनके कुएं से पानी पीने जैसे सभी कार्यों की अनुमति नहीं थी। उनकी इस उपेक्षित स्थिति की एक झाँकी हमें प्रेमचंद जी की कहानी 'ठाकुर का कुआँ' में दिखाई देती है। इस कहानी में बीमार जोखू प्यास लगने पर गंदा पानी पीने के लिए मजबूर है, क्योंकि दलितों के कुएँ में कोई जानवर मर गया है। गाँव के बाकी दो कुओं में से एक ठाकुर का है और दूसरा साहू का है। जब उसकी पत्नीं गंगी उसे गंदा पानी पीने से मना करती है और कहती है कि, वह उसके लिए ठाकुर के कुएँ से पानी ले आएगी। तब जोखू उसे मना करते हए कहता है, " हाथ–पाँव तुड़वा आयेगी और कुछ न होगा। बैठ चुपके से। ब्राह्मण–देवता आशीर्वाद देंगे, ठाकुर लाठी मारेंगे, साहूजी एक के पाँच लेंगे। गरीबों का दर्द कौन समझता हैं। हम तो मर भी जाते हैं, तो कोई दुआर पर झाँकने नहीं आता, कंधा देना तो बड़ी बात है। ऐसे लोग कुएँ से पानी भरने देंगे?"[3] जीवन की अन्य सुविधाओं से वंचित होने के साथ–साथ उन्हें भगवान के मंदिर में प्रवेश से भी वंचित रखा गया। 'मंदिर' कहानी में एक विधवा व गरीब दुखी माँ, अपने बच्चे की सकुशलता के लिए प्रार्थना करने मंदिर में नहीं जा पाती। वह भगवान की पूजा सामग्री जुटाने के लिए, अपने चाँदी के कड़े बेच देती है, पुजारी से प्रार्थना करती है और यहाँ तक कि चोरी मंदिर में प्रवेश की कोशिश भी करती है। कहानी के अंत में उसे व उसके बच्चे को भीड़ द्वारा मारा जाता

है, जिससे उसके पुत्र की मृत्यु हो जाती है और वह भी अपने प्राण त्याग देती है। प्रेमचंद जी की यह कहानी पीछड़े वर्ग की करूणा व वेदना तथा उच्च वर्ग की निर्ममता को प्रदर्शित करती है।

अछूतों व दलितों पर ये आरोप लगाया जाता है, कि वे मांस खाते है, मदिरा पान करतें हैं और अशिक्षित हैं। इन सभी कारणों से वे अपवित्र व अछूत हैं। अगर वे किसी पवित्र स्थान पर प्रवेश करेंगे तो उनके स्पर्श से वह स्थान अपवित्र हो जाएगा। वहीं दूसरी तरफ ब्राह्मण समाज में ये सब व्यसन करने वाले भी पवित्र बनें रहते हैं, क्योंकि वर्ण भेद ऋषियों नें किया है व उसे कोई नहीं मिटा सकता। उच्च वर्ण की ये सोच उनके स्वार्थ, क्रुरता व घिनौनेपन को चित्रित करती है। 'मन्त्र' कहानी में पंडित लीलाधर द्वारा अछूतोद्धार की बातें करने के कारण उन्हें अन्य ब्राह्मणों द्वारा घायल कर दिया जाता है। अछूत बस्ती के लोग तन मन से उसकी सेवा कर उसे जीवनदान देते हैं। इसके बाद पंडित सोचता है कि, "मैं जिन लोगों को नीच समझता था और जिनके उद्धार का बीड़ा उठाकर आया था, वे मुझसे कहीं ऊँचे हैं।"[4]इस कहानी से अछूत समझे जाने वाले लोगों की निःस्वार्थ सेवा व भक्ति का परिचय मिलता है।

प्रेमचंद की कहानियों से पता चलता है, कि अछूतों को सामाजिक, आर्थिक व धार्मिक स्तर पर इतना प्रताड़ित किया गया कि उन्होंने इस अत्याचार को सहन करना अपनी नियति मान लिया। उनकी सारी जिदंगी साहूकारों व महंतो का कर्ज चुकाते–चुकाते बीत जाती है, पर उनका कर्ज नहीं खत्म होता। उनकी मृत्यु के बाद ये कर्ज उनकी आने वाली पीढ़ियाँ चुकाती हैं। इसी प्रकार यह परंपरा चलती रहती है। वे प्यास व बीमारी से अपनी जान गंवा देते हैं, किंतु उन्हें मंहतों के कुएं से पानी पीने की अनुमति नहीं मिलती। वे मंदिर के द्वार पर भी नहीं जा सकते क्योंकि इससे भगवान अपवित्र हो जाएंगे। इस प्रताड़ना व अत्याचार को सहन करते हुए कभी–कभी उनके मन में कर्म व खुशहाल जीवन के प्रति विरक्ति उत्पन्न हो जाती है। जिसका वर्णन 'कफन' कहानी में किया गया है। यह कहानी आलोचना की दृष्टि से बहुत ही चर्चित रही है। इस कहानी के आधार पर प्रेमचंद पर आरोप लगाया जाता है, कि वे दलितों के सच्चे समर्थक नहीं हैं। इस कहानी में घीसू और माधव गरीब व कामचोर पिता–पुत्र है, जो कि पूरे गाँव में बदनाम हैं। वे दोनो आलू खाते रहते हैं और माधव की पत्नी प्रसव पीड़ा के कारण मर जाती है। उसके कफन के लिए इकट्ठे किये गये पैसों से वे भरपेट भोजन करतें हैं। माधव ने कभी भरपेट स्वादिष्ट भोजन नहीं किया है, और घीसू ने बीस साल पहले किसी बारात में भरपेट खाना खाया था। कहीं ना कहीं, उनकी बेकारी व कामचोरी का मूल कारण पक्षपात व अन्याय है। इसलिए मुशी प्रेमचंद जी ने घीसू और माधव के विषय में कहा है, कि, "जिस समाज में रात–दिन मेहनत करने वालों की हालत उनकी हालत से कुछ बहुत अच्छी न भी, और किसानों के मुकाबले में वे लोग, जो किसानों की दुर्बलताओं से लाभ उठाना जानते थे, कहीं ज्यादा सम्पन्न थे, वहाँ इस तरह की मनोवृत्ति का पैदा हो जाना कोई अचरज की बात न थी।"[5]

हमारे समाज में स्त्री होना चुनौतीपूर्ण व अभिषाप के समान है। स्त्री को पितृसत्तात्मक समाज में संघर्षमय जीवन व्यतीत करना पड़ता है। दलित स्त्री को, स्त्री होने के साथ, दलित व गरीब होने के कारण हर तरफ से अत्याचार व शोषण को सहन करना पड़ता है। प्रेमचंद जी ने दलित स्त्री की दयनीय व करूणापूर्ण स्थिति का मार्मिक चित्रण अपनी कहानियों के माध्यम से किया है। 'मंदिर' कहानी में अछूत सुखिया अपने पुत्र की मंगलकामना के लिए मंदिर में प्रवेश की हरसंभव कोशिश करती है। लोगों द्वारा मारे जाने पर जब उसके बीमार पुत्र की मृत्यु हो जाती है। तब वह ममतामयी माँ क्रोध से भरकर भीषण भीड़ को दुत्कारते हुए कहती है,"पापियो, मेरे बच्चे के प्राण लेकर अब दूर क्यों खड़े हो ? मेरे छू लेने से ठाकुरजी को छूत लग गई। पारस को छूकर लोहा सोना हो जाता है, पारस लोहा नहीं हो जाता।"[6] यह कहते हुए वह अपने प्राण त्याग देती है। इसी प्रकार से 'ठाकुर का कुआँ' कहानी में दलित स्त्री गंगी अपने आप को जोखिम में डालकर अपने पति के लिए ठाकुर के कुएं से पानी भरने जाती है। एक तरफ से तो दलित स्त्री को अछूत समझा जाता है, वहीं दूसरी तरफ उन्हें भोग व विलास की वस्तु समझकर, उनका दैहिक शोषण भी किया जाता है। ठाकुरों की इसी मानसिकता को प्रदर्शित करते हुए गंगी कहती है, "कभी गाँव में आ जाती हूँ, तो रस–भरी आँखो से देखने लगते हैं। जैसे सबकी छाती पर साँप लोटने लगता है, परन्तु घमण्ड यह कि हम ऊँचे हैं।"[7] 'घासवाली' कहानी में ठाकुर चैनसिंह मुलिया के सौंदर्य पर मुग्ध है। वह उसे भोग की वस्तु समझता है, इसलिए वह सोचता है, "नीची जातों में रूप–माधुर्य को इसके सिवा और काम ही क्या है कि वह ऊँची जातवालों का खिलौना बने।"[8] जब वह मुलिया के सामने अपना प्रेम प्रस्ताव रखता है, तो मुलिया उसे जली–कटी सुनाती है। मुलिया के स्वाभिमान व अभिमान के समक्ष उसका अहंकार नष्ट हो जाता है। उसका हृदय परिवर्तित हो जाता है और उसके मन में नीची श्रेणी के लोगों के प्रति श्रद्धा व स्नेह के भाव उत्पन्न हो जाते हैं। प्रेमचंद ने दलित स्त्री के शारीरिक व मानसिक उत्पीड़न का मार्मिक वर्णन अपनी कहानियों के माध्यम से किया है। अहिंसा व अन्याय सहन करते हुए भी वह अपने हर प्रकार के कर्त्तव्य का पालन निष्ठा से करती है।

निष्कर्ष

मुंशी प्रेमचंद की कहानियों में दलित समाज की तत्कालीन परिस्थितियों का यथार्थ अंकन किया गया है। अभावों व उपेक्षाओं से निर्मित उनका दैनिक जीवन दारूणता व करूणा से भरा हुआ है। उनकी कहानियों के सभी पात्र वास्तविक जीवन से मेल खाते हैं। कहीं भी बोझिलता व बनावटीपन प्रदर्शित नहीं होता। ये कहानियाँ पढ़ने के बाद सहज ही अनुमान लगाया जा सकता है, कि पिछड़ी जाति को अछूत मानकर जो अत्याचार किया गया, वह कितना अमानवीय व घृणित है। प्रेमचंद जी दलितों के सच्चे समर्थक थे। अगर उनके मन में ये भावना ना होती तो, वे अपनी रचनाओं में दलितों की यथार्थ स्थिति का इतना सटीक व मार्मिक चित्रण ना कर पाते। अपनी कहानियों के द्वारा उन्होंने दलितों पर होने वाले हर प्रकार के अत्याचार को अभिव्यक्ति प्रदान की है।

सन्दर्भ सूची

1. सद्गति (कहानी), सर्च–राज्य संसाधन केन्द्र, हरियाणा 124001, प्रथम संस्करण 2002, पृष्ठ संख्या–11
2. वही पृष्ठ संख्या–42
3. मानसरोवर भाग–1, सरस्वती प्रेस बनारस, छठवां संस्करण 1947, पृष्ठ संख्या–134
4. मानसरोवर भाग–5, सरस्वती प्रेस बनारस, पहला संस्करण 1946, पृष्ठ संख्या–47
5. कफन (कहानी), डायमंड पॉकेट बुक्स, न्यू दिल्ली 110020, प्रकाशित वर्ष 2011, पृष्ठ संख्या–51
6. मानसरोवर भाग–5, सरस्वती प्रेस बनारस, पहला संस्करण 1946, पृष्ठ संख्या–8
7. मानसरोवर भाग–1, सरस्वती प्रेस बनारस, छठवां संस्करण 1947, पृष्ठ संख्या–135
8. मानसरोवर भाग–1, सरस्वती प्रेस बनारस, छठवां संस्करण 1947, पृष्ठ संख्या–292